2018-19

## कोर्स वर्क संगीत

## उच्च पेपर संगीत

अधिकतम अंक : 10

1. नाट्यशास्त्र के अंतर्गत नाट्योत्पत्ति तथा नायक नायिका भेद।
2. परिभाषाऐं - काकु, आड़, कुआड़, बिआड़, आश्रय राग, मेजरटोन, माइनरटोन, सेमीटोन, स्वस्थान नियम, प्रबन्ध, वस्तु, रूपक, नाट्य, नृत्त, नृत्य, तांडव, लास्य।
3. गायन, वादन तथा नृत्य के घराने।
4. वैदिक काल से मध्य काल तक के भारतीय संगीत का इतिहास।
5. भरतकृत सारणा चतुष्टयी। प्राचीन तथा मध्यकालीन ग्रन्थकारों की श्रुति सिद्धान्त पूर्व रंग का अध्ययन।
6. रस निष्पत्ति का सिद्धान्त एवं उसके प्रकारों का अध्ययन। संगीत/नृत्य में रस का महत्व।
7. इलैक्ट्रोनिक वाद्यों के गुण अथवा दोष। निम्नलिखित विषयों का अध्ययन :- ख्याल, धमार, टप्पा, तराना, तिरवट, चतुरंग, ठुमरी, कजरी, चैती, होरी, [illegible], गज़ल।
8. शास्त्रीय संगीत तथा लोक संगीत, शास्त्रीय नृत्य तथा लोक नृत्य का अन्तर।
9. निम्न ग्रन्थकारों एवं उनके ग्रन्थों का परिचय - भरत - नाट्यशास्त्र, नंदिकेश्वर - अभिनय दर्पण, शांरगदेव - संगीतरत्नाकर, अहोबल - संगीतपारिजात
10. राग ध्यान तथा राग रागिनी चित्रीकरण। नृत्य हस्त का अध्ययन।

HEAD
SOS Library and Information Science
Jiwaji University Gwalior (M.P.)

कोर्स वर्क संगीत 2020-21

उच्च पेपर संगीत

26

1 नाट्यशास्त्र के अनुसार नाट्योत्पत्ति तथा नायक-नायिका भेद।

2. परिभाषाऐं - काकु, आड, कुआड, बिआड, आश्रय, राग, मेजर टोन, माइनर टोन, सेमीटोन, स्वस्थान, नियम, प्रबंध, वस्तु, रूपक भेद, नाट्य, नृत्त, नृत्य, तांडव, लास्य, पेशकार, कायदा, रेला, लग्गी, लड़ी।

3. गायन, वादन तथा नृत्य के घराने एवं विशेषताऐं।

4. वैदिक काल से मध्यकाल तक भारतीय संगीत (गायन, वादन और नृत्य) का इतिहास।

5. भरतकृत सारणा-चतुष्टयी। प्राचीन तथा मध्यकालिन ग्रंथकारों के श्रुति सिद्धांत और पूर्व रंग का अध्ययन।

6. रस निष्पत्ति का सिद्धांत एवं उसके प्रकारों का अध्ययन। गायन, वादन और नृत्य में रसनिष्पत्ति का महत्व।

7. इलैक्ट्रानिक वाद्यों के गुण-दोष, नर्तक-नर्तकी के गुण-दोष एवं वादकों के गुण-दोष का ज्ञान के साथ-साथ - ख्याल, धमार, टप्पा, तराना, तिरवट, चतुरंग, ठुमरी, कजरी, चैती, होरी, भजन, गजल आदि का अध्ययन।

8. शास्त्रीय और लोक संगीत-नृत्य तथा वाद्यों का अध्ययन। (गायन, वादन और नृत्य के संदर्भ में)

9. निम्नलिखित ग्रंथकारों एवं उनके ग्रंथों का परिचयात्मक अध्ययन: -
(i) भरत - नाट्यशास्त्र, (ii) नंदिकेश्वर - अभिनयदर्पण, (iii) शारंगदेव - संगीत रत्नाकर, (iv) अहोबल - पारिजात, (v) धनन्जय - दशरूपक।

10. रागध्यान तथा रागरागिनी चित्रीकरण। नृत्त हस्त का अध्ययन।

11 ताल के दश प्राणों का अध्ययन।

24/9/2020
(प्रो० बी०डी० मलिक)
अध्यक्ष
Dr. B.D. MALIK
Head of Department (Dance)
V.R.G. Girls P.G. College, Morar Gwalior

2018-1

कोर्स वर्क संगीत

उच्च पेपर संगीत

अधिकतम अंक

1. नाट्यशास्त्र के अंतर्गत नाट्योत्पत्ति तथा नायक नायिका भेद।
2. परिभाषाऐं - काकु, आड़, कुआड़, बिआड़, आश्रय राग, मेजरटोन, माइनरटोन, सेमीटोन, स्वस्थान नियम, प्रबन्ध, वस्तु, रूपक, नाट्य, नृत्त, नृत्य, तांडव, लास्य।
3. गायन, वादन तथा नृत्य के घराने।
4. वैदिक काल से मध्य काल तक के भारतीय संगीत का इतिहास।
5. भरतकृत सारणा चतुष्ट्यी। प्राचीन तथा मध्यकालीन ग्रन्थकारों की श्रुति सिद्धांत पूर्व रंग का अध्ययन।
6. रस निष्पत्ति का सिद्धान्त एवं उसके प्रकारों का अध्ययन। संगीत/नृत्य में रस का महत्व।
7. इलैक्ट्रोनिक वाद्यों के गुण अथवा दोष। निम्नलिखित विषयों का अध्ययन :- ख्याल, धमार, टप्पा, तराना, तिरवट, चतुरंग, ठुमरी, कजरी, चैती, होरी, गजल।
8. शास्त्रीय संगीत तथा लोक संगीत, शास्त्रीय नृत्य तथा लोक नृत्य का अन्तर।
9. निम्न ग्रन्थकारों एवं उनके ग्रन्थों का परिचय -
   भरत - नाट्यशास्त्र, नंदिकेश्वर - अभिनय दर्पण, शारंगदेव - संगीतरत्नाकर,
   अहोबल - संगीतपारिजात
10. राग ध्यान तथा राग रागिनी चित्रीकरण। नृत्त हस्त का अध्ययन।

Dean
SOS Library and Information Science
Jiwaji University Gwalior (M.P.)

Dr. Sanjeev ...
Professor

कोर्स वर्क संगीत 2020-21
उच्च पेपर संगीत

(26)

1 नाट्यशास्त्र के अनुसार नाट्योत्पत्ति तथा नायक-नायिका भेद।

2. परिभाषाएं - काकु, आड़, कुआड़, बिआड़, आश्रय, राग, मेजर टोन, माइनर टोन, सेमीटोन, स्वरस्थान, नियम, प्रबंध, वस्तु, रूपक भेद, नाट्य, नृत्त, नृत्य, तांडव, लास्य, पेशकार, कायदा, रेला, लग्गी, लड़ी।

3. गायन, वादन तथा नृत्य के घराने एवं विशेषताएं।

4. वैदिक काल से मध्यकाल तक भारतीय संगीत (गायन, वादन और नृत्य) का इतिहास।

5. भरतकृत सारणा-चतुष्टयी। प्राचीन तथा मध्यकालिन ग्रंथकारों के श्रुति सिद्धांत और पूर्व रंग का अध्ययन।

6. रस निष्पत्ति का सिद्धांत एवं उसके प्रकारों का अध्ययन। गायन, वादन और नृत्य में रसनिष्पत्ति का महत्व।

7. इलेक्ट्रानिक वाद्यों के गुण-दोष, नर्तक-नर्तकी के गुण-दोष एवं वादकों के गुण-दोष का ज्ञान के साथ-साथ- ख्याल, धमार, टप्पा, तराना, तिरवट, चतुरंग, ठुमरी, कजरी, चैती, होरी, भजन, गजल आदि का अध्ययन।

8. शास्त्रीय और लोक संगीत-नृत्य तथा वाद्यों का अध्ययन। (गायन, वादन और नृत्य के संदर्भ में)

9. निम्नलिखित ग्रंथकारों एवं उनके ग्रंथों का परिचयात्मक अध्ययन:-
(i) भरत- नाट्यशास्त्र, (ii) नंदिकेश्वर- अभिनयदर्पण, (iii) शारंगदेव- संगीत रत्नाकर, (iv) अहोबल - पारिजात, (v) धनन्जय - दशरूपक।

10. रागध्यान तथा रागरागिनी चित्रीकरण। नृत्त हस्त का अध्ययन।

11 ताल के दश प्राणों का अध्ययन।

24/9/2020
(प्रो० डॉ. ए. मल्लिक)
अध्यक्ष
Dr. B. A. Mallik
Head of Department (Dance)
V.R.G. Girls P.G. College, Morar Gwalior